



२७३८

## रसिक स्तवनावली.

—००६३०३०—

सखे जैन बन्धुबने साह

वपावी प्रतिष्ठा करनार

जालोरवाला मुत्ता लालचंद धनराजजी.

## श्रमदावाद

माणिकचोक भागवत कागदीठलनी साभे

शा० हीराजाद पुंजासाना मकानमां

“श्रमदावाद टाउम्स प्रेस”मां

कालीदास सांकलचंदे गणी.

संवत् १९४२

सने १८८६

कीमत ०—२—६



महा मुनीराज महाराज जग  
जीवना तारु राजेंद्रसूरिजीनां  
बनावेलां स्तवनो.

श्रीनेमीश्वर जगवानने राजुल नारी  
वीनती करे ठे तेनुं.

॥ प्रीयमित्रवीनाहोजाइ ॥ कुणंमोहब  
तसाचवेआंही ॥ एदेशी ॥ विनगुनात  
जीनेनारी॥ सखिनाहचलयोगिरनारी॥  
आंकणी ॥ जानलइनेआयो ॥ कयुंएह  
आंवरलायो ॥ इमरोतीराजुलप्या  
री॥सखिनाहचलयोगिरनारी ॥ वि० १॥  
पशुदयारिदितुमेआणी॥ मुजमुखनीसु  
णीनहींवाणी॥ पिठदयानहींएसारी ॥  
सखिनाहचलयोगिरनारी ॥ वि० २ ॥

२

मुजहियमोबहुइमफाटे ॥ विनदोसतजी  
 तिणमाटे ॥ किसआगलकरुंपुकारी ॥ स  
 खिनाहचल्योगिरनारी ॥ वि० ३ ॥ शि  
 वनारीनासुखनोनेगी ॥ मुजठोमिथयो  
 तुंजोगी ॥ हुंपणदेखिशतेनारी ॥ सखि  
 नाहचल्योगिरनारी ॥ वि० ४ ॥ व्रत  
 धारीराजुलचाली ॥ शिवनारीनेनिजर  
 निहाली ॥ जनममरणडुखवारी ॥ स  
 खिनाहचल्योगिरनारी ॥ वि० ५ ॥ गि  
 रनारउपरतजीकाया ॥ जिननेममुगती  
 पुरीपाया ॥ जाउंसूरिराजेंडवल्लिहारी  
 ॥ सखिनाहचल्योगिरनारी ॥ वि० ६ ॥  
 इतिस्तवनं १॥



श्रीनेमीसर श्रीहंतने राजुल नारी  
वीनती करेते तेनुं॥

॥ प्राणनाथमित्रमाटेतो ॥ आपोबोत  
मेप्राण ॥ एदेशी ॥ स्नेहनगंमोनाह  
ला ॥ नवन्नवनोरेजेह ॥ अवगुणगेमुऊ  
मांकिइयो॥ किमदाखोबोतेह॥ स्ने० १॥  
शिवनारीवेश्याजीसी ॥ तेहथीराखोबो  
प्रीत ॥ एहथिरेअवगुणशोबीजो ॥ अते  
लोकमांएविपरीत ॥ स्ने० २ ॥ हवेहुं  
साथनविबोझइयुं ॥ अवरनपतिधरुंकोय  
॥ सोवनथालमूकिठीकरुं ॥ ज्ञालेमूर  
खसोय ॥ स्ने० ३॥ इमकहीराजुल  
नेमनो ॥ हाथधरावेरेशसि ॥ संजमपा  
लीअतिआकरुं ॥ शिवपुरपोतीजगी

श ॥ स्ने० ४ ॥ नेमगिरनारचांउपरें ॥  
 अणसणलहीसुखकार ॥ परण्याशिव  
 नारीपुरी॥सूरिराजेंजयकार॥स्ने०५॥  
 इतिस्तवनं २ ॥

॥ श्रीनेमैसरदेवने राजुलनारी  
 वीनती करे बे तेनुं ॥

॥ अचानकआशोकोपकिनोकिरतार ॥  
 एदेसी ॥ करेप्रभुनेमजीशुं राजु  
 लपोकार ॥ तजोतनेस्यानेभुजने  
 प्रीतितोसंजाल ॥ मलेवमीएककोइ  
 सजनअजाण ॥ चुलेनथीप्रेमते तनो  
 तोसुजाण ॥ क०.१ ॥ हिवेमाहरेकुण  
 इह लोकमांसगो ॥ दीउस्यानेनारीने  
 पिउ एटलोदगो ॥ कहेइमतोमेहार

माथानालटा ॥ सखीपिणरोतीजुवेते  
 हनीठटा ॥ क० २ ॥ रटेपिठपिठमु  
 स्वशुं धरामेठली ॥ जलविणजाणे  
 ज्युंलुटे पमीनाछली ॥ अचानकचेत  
 आठयो कहेनक्युंमरी ॥ उठीनेक  
 हेहुंतो जावश्युंपरी ॥ क० ३ ॥ इस्यो  
 जठप्रेमजाणि आणीनेमदया ॥ सुखे  
 मेलीमुक्तिमेंकरि राजुलमया ॥ सरेस  
 हुकाजमिले ॥ संगतीजली ॥ वंदतसूरि  
 राजेंद्र ॥ संपदामली ॥ क० ४ ॥ इति ३ ॥

॥ श्री शांतीनाथ जगवानना

गुह्यामनुं ॥

॥ दयालुदेव कृपालुतुं ॥ नमुंछुहस्त जो  
 मीहुं ॥ एदेसी ॥ जिनेंदशांति दयालुतुं ॥

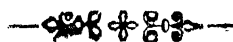


नजुबुंचित धारीहुं॥ करीमेंआश हवेतोरी  
 ॥ नवोकीफेरि दोठोरी ॥ जि० १ ॥ तुमे  
 ठोनाथ कृपावंता॥ हरीपारेव कीचिंता॥  
 मृगीनोरोग तुमेटाल्यो॥ नजो जिनधर्म  
 उजवालयुं ॥ जि० २ ॥ हजीतुं देव करे  
 शांति ॥ जपेजोनाम एकांति॥ नहींको  
 आस मुजेदूजी ॥ रहंतोचरण नेपूजी॥  
 जी० ३॥ लहीहेजिन तुमोसेवा॥ नहीं  
 कोआर मुजेदेवा ॥ कर्षाजवनृत्य तुमो  
 आगुं ॥ खरीहुंरीझ अबमागुं ॥ जि०  
 ४ ॥ रीझ्यातोमुक्ति प्रजुदीजे ॥ खि  
 ज्यातो नृत्य वरजीजे॥ सूरिराजेंद्र कृपा  
 लुतुं ॥ नमुंहुं हस्त जोमीहुं ॥ जि० ५॥  
 इतिशांतिस्तवनं ४ ॥

॥ श्री समकीर्त शुद्ध करवानुं ॥  
 ॥ प्रियमित्रविनाहोनाई ॥ एदेशी ॥  
 समकीर्तविनाहोनाई ॥ जीवरुलेगति  
 चउमांही ॥ इमकहेजिनेश्वरवाणी ॥ न  
 विजीवदयादिलआणी ॥ विनसमकि  
 ततरोननाई ॥ जीवरुलेगतिचउमांही  
 ॥१॥स०॥ तपजपक्रियासहुफोक॥ इम  
 नाखेतेसद्गुरुलोक॥ तुमेशंकाकरोनव  
 कांइ॥ जीवरुलेगतिचउमांही॥२॥स०॥  
 बहुजीवदयानितपाली ॥ विणसरधा  
 गइसहुखाली ॥ तुमेतजोकुगुरुसंगना  
 ई ॥ जीवरुलेगतिचउमांही ॥३॥ स०॥  
 ब्रह्मचर्यनलीविधिपाल्यो ॥ वलिदोष  
 जूठपिण्डाल्यो ॥ नविआतमकरणीपाइ

८

॥ जीवरुलेगतिचउमांही ॥४॥ स०॥ प  
रिग्रहनीममतामोमी ॥ धरचांलिंगअनं  
ताकोमी॥ पिणगरजसरीनहीकांड॥ जी  
वरुलेगतिचउमांही ॥५॥ स०॥ त्रणकाल  
करिजिनपूजा ॥ तिहांजावथयानहींदू  
जा॥ पिणसरधासाचीनआइ॥ जीवरुले  
गतिचउमांही ॥६॥ स०॥ जणयोगुण्योस  
हुधूल॥ जिमजाणेपलालनोपूल॥ एह  
यातमांसुत्रसखाइ ॥ जीवरुलेगतिचउ  
मांही ॥७॥ स०॥ इमसूरिराजेंद्रप्रकाशे  
॥ जविसमकितजजोवलासे ॥ जिमहोवे  
सिद्धिसगाई ॥ जीवरुलेगतिचउमांही  
॥ ८ ॥ स०॥ इतिपदं ५ ॥



ए

॥ सोलमा श्रीसांतीनाथ महाराजनुं ॥  
॥ त्रेवीसमाजिनेश्वरस्वामीजी ॥ पुरो  
मोरीआश ॥ ए देशी ॥ सोलमाशां  
तिजिनेश्वरस्वामी ॥ आशातारीधार  
॥ हुंआव्योतुजआगले ॥ करोमाह  
रीसार ॥ १ ॥ दारअनंतानवमेंप्र  
नुजी ॥ कीधामेंजेपाप ॥ तुंजाणेतेसर्व  
प्रकारे ॥ जगन्नाथबेआप ॥ २ ॥ अचिरा  
नंदनअरजीलीजे ॥ कीजेमुक्तिवास ॥  
बेआशाएचेतनने ॥ अव्याबाधविलास  
॥ ३ ॥ देवअनेशसमरथनांही ॥ देख्यावि  
श्वेंसोधी ॥ हुंस्त्रीलंपटअवरनेतारे ॥ आ  
पेतेकिमबोधी ॥ ४ ॥ सूरीराजेंदरजीतुम  
आगले ॥ करीवीनतीसार ॥ नेंगुणगाया

ताहरा ॥ उतारोजवपार ॥५॥ इति६॥

॥ श्रीसमकीर्त शुद्ध करवानुं ॥

॥ सुणोदील्लीतरुतधरनार ॥ क्षत्रीक  
लंककिमलेइयेरे ॥ ए देशी ॥ सु

णोजविजर्मतजीसार ॥ श्रद्धाविणकि  
मतरइयोरे ॥ नाखेजिनतुमहितकार ॥

श्रद्धाविणकिमतरइयोरे ॥ नथीफलआ  
पेतपजप ॥श्र०॥ जण्योतेहसर्वजाणोग

प ॥श्र०१॥ समकित्तविणनहींमुक्त ॥

श्र० ॥ लूणविनाजिमनुक्त ॥ श्र० ॥

तिमजाणोव्रतसहुफोक ॥श्र० ॥ इमजा

खेसूरिजनलोक ॥श्र०२॥ मिटेनहीते

नोजवफेर ॥ श्र०॥ जोवोसूत्रसिद्धांतजे

हेर॥ सम्यक्तथीजवसंख्याहोय॥ आव

इयकसूत्रलेज्योजोय॥ श्र० ३ ॥ पंचाश  
 कजाखेविधिशुद्ध॥ धारोतुमेनिश्चेकरीबु  
 द्ध॥ राखोएकचित्ततेत्रहदेव ॥श्र०॥ क  
 रोमुक्तिनेअर्येसाचीशेव ॥श्र० ४ ॥ रा  
 खोमतखोटोगुरुधर्म ॥श्र०॥ जाणोनंद  
 तत्वतणोमर्म ॥श्र० ॥ वदेसूरिरांजेज्जी  
 साच ॥ मिथ्यामांहीरहोमतराच ॥ श्र०  
 ५॥ इति ७ ॥

॥ श्रीसमकित्त शुद्ध करवानुं ॥  
 ॥मुजउपरगुजरीपितापादशाजाणी॥ ए  
 देशी॥समवसरणरचेदेव फुलविठवे ॥  
 सिंहासनत्रणकोट बनावेजावे॥ तिहांवे  
 शीमहावीरदेव वदेएवाणी॥नथीविनास  
 मकित्त तरेतुंप्राणी ॥१॥खरोधरोतजिन्न

र्म धर्मजिनवरको॥तजोकुगुरुकुदेव फंद  
काफरको॥जिनसूत्रमांहीकह्योएम वात  
एजाणी ॥नथी०७ ॥ करेनिरजराबहुक  
ट्टे सहेजेतेह॥ विजयरायनेजेम संपदा  
लेह॥मनवच्चकायकरीशुद्धधरेजेप्राणी॥  
नथी० ३॥ जिनदारिसणकरेनित्य जाव  
नाजावे॥समकित्तथावेशुद्ध मोक्षतेपावे॥  
इमजाखेसूरिराजे॥सूत्रनीवाणी॥नथी  
दिनासमकित्त तरेतुंप्राणी ॥४॥ इति॥

॥ श्रीशांतिनाथ महाराजनं ॥

॥ आदीजीनअंतरजामी ॥ ए देशी ॥  
शांतिजिनसंपतकाशी ॥ जगउपगारीदे  
वारे॥ देखंतांदिलमुकरीजे ॥ सेवंतांशि  
वसुखलजि ॥शां० १॥ मोहनमूरतिसो

हेरे॥ जविजननांमनमोहेरे ॥ देवनएह  
 वोकोहे ॥ कर्मविदारणजोहे ॥ हुंसमरुं  
 निततोहे॥ दीठांथीजविबोहेरे ॥ शां०९  
 ॥ विश्वसेनकुलचंदारे ॥ अचिरामात  
 आनंदारे॥ सेवेसुरनरइंदा ॥ कंचनवर  
 णसोहंदा॥ कापेजवजयकंदा॥ सोम्या  
 कारज्युंचंदारे ॥ शां०३॥ चक्रवर्तपदपा  
 यारे॥ खटखंडनाप्रचुरायारे ॥ मृगलंछ  
 नसोहाया॥ मस्तकउत्रधराया॥ तीर्थप  
 आपकहाया ॥ मुक्तिसौधसिधायारे ॥  
 शां०४॥ नगरधोराजीआयोरे ॥ दरस  
 णतुमचोपायोरे॥ कारणकार्यदीपायो ॥  
 आनंदपर्मनुपायो॥ मिथ्याजर्ममिटायो  
 ॥ संवरअधिकसोहायोरे ॥ शां०५॥ स



रिराजेंजदिलरंगेरे ॥ गुणगायान्तरंगेरे  
 ॥ द्विचउनवइकचंगे ॥ कार्तिकमासउ  
 मंगे ॥ सुदिदशमीउतंगे ॥ लगीलग्नजि  
 नसंगेरे ॥ शां० ६ ॥ इति ए ॥

॥ श्रीशांतिनाथ महाराजनुं ॥  
 ॥ पीलेमेकोजामवालम ॥ पीठ ॥ एदे  
 शी ॥ सेवोशांतिस्वामसाहिब ॥ से०  
 ॥ आंकणी ॥ सेवाथीसुखसंपजे ॥ जा  
 यसविजंजाल ॥ देवानिरंजनसाचाजा  
 णो ॥ बांमोआलपंपाल ॥ साहिबसे०  
 ॥ १ ॥ कानेकुंमलजलहले ॥ हियमे  
 नवलखहार ॥ बांहिंबाजुबंघबहिरखा ॥  
 मस्तकमुकटमनुहार ॥ सा० से० ॥ २ ॥ आं  
 खमीअंबुजपांखमीजुं ॥ मूरतिमोहनवेल

॥ विश्वसेनसुतवालिममोरो ॥ मुक्ति  
पुरिनोठेल ॥ सा० से०॥३ ॥ अंतरंग  
अनुजवकरोरे ॥ देखोदेवदयाल ॥ मि  
थ्यातिमिरदलजंजणोरे ॥ विश्वमेंम  
हिमाविसाल ॥ सा० से० ४ ॥ धोरा  
जीनगेरधारियोरे ॥ सूरिराजेंडसुखका  
र ॥ दिनदिनअधिकीसंपदा ॥ संधमां  
जयजयकार ॥ सा० से०५॥ इति१०॥

॥ श्रीपार्श्वनाथ माहाराजनुं ॥  
॥ दयालुदेव ॥ एदेशी ॥ अहो  
जिनपास प्रजावीतुं॥ करुंभुंआस तेरी  
हुं ॥ प्रजुतुंशुद्ध उपगारी ॥ दयातें  
नाग कीधारी ॥ अ० १॥ जोगीकमठ  
मदगाल्यो॥ जनोकोजर्म तेंटाल्यो॥ क

रीतिकष्ट मेघमाली॥कुट्टष्टी ताहिकीवा  
 री ॥ अ० १ ॥ हरीजादव जरादूरे ॥  
 मनोवन्धित तुंपूरे ॥ मिट्योएलग नृपरो  
 ग॥लहेसोधर्म संयोग ॥अ० ३॥ कर्षा  
 उपगार तुमेनारी॥ लहेइयुंपार संसारी  
 ॥अरागीदेव असंगीतुं ॥ कहुंशीरूपात  
 तेरीहुं ॥ अ० ४ ॥ हिवेहेनथ कृपाकी  
 जे ॥ नुजेचारित्र सुखदीजे ॥ सूरिराजें  
 ज जगद्धाता॥ तुंहिहेस्वामी मोत्राता॥  
 अ० ॥ ५ ॥ इतिस्तवनं ११॥

श्री धोराजिमां अठाइ ओठ्य

थयो तेनुं ॥

॥ गोपीचंदलडका ॥ एदेशी ॥ सुण  
 सहिसहेली ॥ आजउठवबनियोरं

गसुं॥ आकणी ॥ आठदिवसअठाइम  
 होव ॥ जिनपूजासुखकार॥ नगरधो  
 राजीमांहिनेजेकांड॥ वरत्याजयजयका  
 ररे ॥ सु०१॥ हाथीघोमरथपालखी॥  
 वरघोमाबेवार ॥ वाजांविविधप्रकारनां  
 वाज्यां॥ मादलजुंगलतालरे ॥ सु०॥१॥  
 मंदपमांमधोअतिहीमोटो ॥ मांमिस्वर्ग  
 शुंवाद ॥ परगटपासजिणंदबीराज्या॥  
 तज्याकुमतिउनमादरे ॥ सु०॥३॥ उजम  
 णोवलीविसथानकनो॥ श्राविकाकानो  
 खंत॥ नबीकजीवकांडिसमकीतपाम्या॥  
 धर्मजैनतेतंत ॥ सु०॥४॥ समोवसरणकी  
 रचनाशोने ॥ मनीजगामांही ॥ त्रीग  
 मेवारपरखदाबीराजे ॥ आनंदअधिक

उगाहरे ॥ सु० ॥५॥ कार्तिकवदीपंचमी  
 भोजारी ॥ दिक्षानुवकीनो ॥ उगणी  
 सेंबेताखीशवरशे ॥ संघेबहुजसलीनो  
 रे ॥ सु० ॥६॥ वातकहुकेटलीबनावी ॥  
 दीठोतेहीजजाणे ॥ सूरिरार्जेजनीवाचा  
 साची ॥ शंकाकोइनआणारे ॥ सु० ॥७॥  
 इतिअठाइपार्श्वस्तवनं १२ ॥

॥ श्रीसीधाचलजीनुं ॥

॥ जरतरिभ्राताविचारिनेतमे करोहुंउप  
 रकोप ॥ एदेशी ॥ आदीश्वरत्रातापू  
 जीएभवी मिटेयुंजवसंताप ॥ जरामर  
 णटले ॥ तमेकरोभुझमनजाप ॥ आदी०  
 ॥१॥ जिननवाणुंबार ॥ गिरिवरशत्रुंजे  
 आय ॥ तीरथआव्यांथीथयो ॥ जवी

२ए

चेटंताकटेपाप ॥आदी० ॥१॥ बहुमुनि  
संधामाए कठीणकर्मनेकाप ॥ मुक्तिना  
रीआवासमांजइ पोताकरेसंलाप ॥  
आ० ॥३॥ बहुअपराधिए मयूरमणिध  
रसाप ॥ सूरिराजेंजनोसमरणकरतां ॥  
बूटयाजवदवताप ॥आ०॥४॥इति १३॥

॥ अथ श्रीनेमेश्वर जगवाननुं ॥

॥ धिकयुवाधिकमुजने धिककामविका  
रजी ॥ एदेशी ॥ धिकधिकआसंसारने  
धिकमोहजंजालजी ॥ सगोरेनहींकोइ  
जगतमां दीसेबेआलपंपालजी ॥ १ ॥  
बोमीचाल्योरेनेममुजझणी ॥ एआंकणी  
॥ केहनारेघरकेहनामालिया केनाबेमा  
यनेबापजी ॥ एकलोचनेरेजीवजगतमां

डुरबुद्धिकरीपापजी ॥१॥ ठो०॥ लक्ष्मी  
 चलप्राणचलश्रुते चलेजोवननेकायजी  
 ॥ मूरखथिरमानेअथिरने ठोमिठोमिने  
 जायजी ॥३॥ ठो०॥ करमवश्येरेजीवनर  
 कमां ममताथीसहेमारजी ॥ मारोमारो  
 रेकरीनेमरे कोइनचालेलारजी ॥ ४ ॥  
 ठो० ॥ जीणघररमणीरिरामतकर्यां तेघ  
 ररानसमानजी ॥ गजघोमारेरथपाल  
 खी दीसेबेतीहांमसाणजी ॥५॥ ठो० त्र  
 णखंमराजनेनविगण्यो ठांमीरुपालीना  
 रजी ॥ कामजीतिरेसंजमआदर्यो धन  
 तेनमकुमारजी ॥६॥ ठो०॥ धिकसुखतु  
 णारेपापणी वलगीकालअनंतजी ॥  
 साधनआवेरेकोइजारजा कुणकेहनोवे

कंतजी ॥७॥बो०॥ इमबिलपंतीरेसंजम  
 आदरे जाणीअथिरसंसारजी ॥ राजु  
 लबुजव्योरथनेमने दीठिगुफागिरनार  
 जी ॥८॥बो०॥ चारित्रपालिरेअतिनिर  
 मलो सिद्धिसौधसिधायजी॥ सूरिराजें  
 ज्वंदेसिद्धने जोतिमांजोतिसमांयजी ॥  
 ए ॥ बो० ॥ इतिस्तवनं १४॥

॥ श्रीनेमेसर जगवाननुं ॥  
 ॥ गोपीचंदलमका ॥एदेशी ॥ मेरेप्यारे  
 नेमजीस्यानेबोझोरेमुजनेरोवती ॥ जोग  
 करमनोअंतहमारेअवसरलेस्यांजोग॥  
 हिवेतुंकालावालाकरीने कपुंवलगाम्रो  
 ग ॥ मेरीराजुलप्यारी सहसावनमेहे  
 दिक्षाधारसां ॥१॥ नवजवनीतमेप्रीतने



तोमो मांमोहछत्रपार॥ तीर्थकरसहुना  
 रीवरीने पास्यान्नवनोपार ॥१॥ मे० ने०  
 ॥ तीर्थकरजेनोमीपरण्या तेहनोनहीं  
 बेरोष ॥ क्षीणजोगीहुंस्यानेकारण करुं  
 हिंसानोयोष ॥३॥ मे० रा० हिंसाथीन  
 यपामोप्रचुजी तोमुजनेकिमगोमो ॥ वे  
 दनमाहरीनहींशुंजाणो ऊटकेनेहनतो  
 मो ॥४॥ मे० ने० नेहखरोतपजपनो  
 प्यारी ऊतारेनवपार ॥ अवरनेहसहु  
 जूठाजगमें जिनवरवचनवीचार ॥५॥  
 मे० रा० ॥ तोहिवेसंजमदेइमुजने आ  
 पोशिवपुरवास ॥ माहरेतोपतिप्यारातु  
 मगो पुरोमननीआश ॥६॥ मे० ने० ॥  
 प्रथममुक्तिराजुलनेमेळी दंपतिप्रिमप्र

माण॥सूरिराजेंद्रएसमरथसाहिब सेवो  
थइसावधान ॥७॥मे०राण॥ इति १५॥

॥ श्रीअष्टापदजीनुं ॥

॥ आदिजिनस्वामी पुजाकरुआज ॥  
एदेशी॥ आदीजिनवंडु अष्टापदेजाय ॥  
जावनाजावुं स्तवनबनावुं॥आण॥ आंक  
णी०॥चकुविसीध्यावुंने पापपखालुं॥हु  
रमतिटालुं धरमनिहालुं॥आदीण॥१॥  
मानमदगोप्ती करमनेतोदु॥ जरमने मो  
दु चारित्रशुंजोदु ॥आदी०॥२॥ ऊपस  
मनीरे नवणकरावुं॥ सरधाषोलावुं फु  
लवीठावुं ॥आदीण॥३॥ ध्यानजहिरनुं  
धूपजगावुं ॥ प्रज्जुगुणगावुं केसरचढावुं  
॥आदी०॥४॥ तत्वत्रणशिर मुगटदीपा

वुं॥ अंगीयांबनावुं शीलसुंजावुं ॥ आ  
दी०॥५॥ अष्टशतगुणनी मालपहिरावुं  
॥ज्ञानलयलावुं वाजीत्रवजावुं॥आ०॥६  
॥सूरिराजेंडुनुं समरणधारुं ॥ अन्यसुर  
वारुं सूत्रसंजारु ॥आ०॥७॥ इति१६॥

॥ श्रीशांतिनाथ अष्टाद्व स्तवन ॥  
॥ मोहनरसियोआयोवगीआमे ॥ ए  
देशी ॥ आजउवसखीधोराजीनगर  
में ॥ मंगलमालारलीयरली ॥ आं  
कणी ॥ एकशांतिजिननामसंजारे ॥  
हुसरीसखीगावेमलीयमली॥१॥ आ०  
आठदिवसप्रचुपुजारचावे॥ फुलचढावे  
चुनिकलीयकली ॥२॥आ०॥ मंरुपशो  
जावरणीनिजावे॥ नाचेसखीनीहांजली

७५

यज्ञलो ॥३॥ आ० धर्मध्यानकीधूमम  
चावे॥ आवेशुंसंपदाचलीयचली ॥४॥  
आ०॥ सूरिराजेंजनांसूत्रसंजालो॥ न  
रमजायेसबटलीयटली ॥ ५ ॥ आ०  
॥इतिस्तवनं १७ ॥

॥श्रीशांतिनाथ अरिहंतजगवाननुं ॥

॥ इंग्रेजी वाजानी राह ॥

॥ आनंदकंदपूजतां ॥एदेशी ॥ समृद्धि  
वृद्धिसिद्धिदे शर्मादशांतितुं२॥स०॥आं  
कणी॥ तारतारपारवार रंकजंतहुं॥ तो  
समुनउरसरण विरुद्धारतुं ॥१॥स०॥  
कर्मजर्मद्वांतधोत चंडकांतजुं ॥ रुपनुं  
निधानकवण तुमारीसारीसुं ॥२॥ स०  
॥ शांतदांतवीरधीर तंतसंततुं ॥ विश्व

२६

नुंउद्धारकरण चक्रधारज्युं ॥३॥ स० ॥  
क्रोधजोधमारमोह मुक्तिसंक्रमुं ॥ कीर  
तिप्रबंधबहुत कथनपारलुं ॥४॥ स०॥  
नूरिसूरिराजइंद चंदवंचतुं ॥ संवरस  
माधीकरण नमततोयेहुं ॥५॥ स० ॥  
इतिस्तवनं १७ ॥

॥ श्रीतीरथवंदनानुं.॥

॥ मेरानेमालगानाजिनंदनसे ॥एदेशी  
॥ मेनेधारलीयाजीनवंदनकुं हिंसाध  
र्मसबगंनके ॥मे० ॥ आंकणी ॥ जिन  
नाषितशुतजोधवनाया मिथ्याझुंननि  
कंदनकुं ॥हिं० ॥१॥मे० समकितसंवर  
कोटकुंखंची डुरकियासहुफंदनकुं॥हिं०  
॥२॥ मे०॥ सिद्धाचलवलीआबुअष्टाप

द धुलेववंडनाजिनंदनकु ॥ हिं० ॥ ३ ॥  
 मे० ॥ अजीतनाथतारंगगिरिपर गीर  
 नारनमुंजडनंदनकुं ॥ हिं० ॥ ४ ॥ मे० ॥  
 धोराजीनगरेशांतिजिनेसर वंडुडरग  
 तिखंनकुं ॥ हिं० ॥ ५ ॥ मे० ॥ संखे  
 श्वरप्रभुपासनेपूजुं ॥ पुरमावेवीरनि  
 रंजनकुं ॥ हिं० ॥ ६ ॥ मे० ॥ सूरिराजेंड  
 नातीरथसरवे तारकबेनविट्टंदनकुं ॥  
 हिं० ॥ ७ ॥ मे० ॥ इति १ ए ॥



॥ श्रीसुमतीनाथ जगवाननुं ॥  
 ॥ ललीतनीचालनीदेशी ॥ सुमतीनाथ  
 ने वंदनाकरु सकलपापकुं टालीहुंपरुं ॥  
 सुमतीदेसदा संपदाकरी वरजस्वामीमो

आपदापरी ॥१॥ अमरएकतुं नाथमाह  
 रे अजरअर्हतुं व्याधिनेहरे अचलसिद्ध  
 तुं ब्रह्मरूपहे परमजोतीनो तुं स्वरूपहे ॥२॥  
 ॥सरवजाणो दशीं सरवना परमपूज्य  
 ओतीनलोकना ॥जगतपालहे भ्रातता  
 तज्युं गुणजिनेंजना पारस्युंलहुं॥३॥ ज  
 गतजोनिमां जनममेलह्या प्रबलकष्टजे  
 मारनासह्या ॥ शरणताहरे आवीयोह  
 वे ॥ करमवारतुं माहरांसवे ॥४॥ तुजवि  
 नानको देवमाहरे अबेघणाजृत्थ स्वामी  
 ताहरे ॥ जजतसूरिरा जेजनेबहु तदपि  
 ताहरो सेवनारहुं ॥५॥ इति २०॥

---

॥ श्री तीनथुइना सूत्रनी लावणी॥  
 ॥ शांतिनाथनेसमरणकरीने कहुंपंचां

गीविस्तारी ॥ सूत्रनिर्युक्तिज्ञाप्यनेचू  
 णीं॥ टीकाजाणोहदजारी ॥ पंचांगीने  
 जोनहींमाने ॥ सोमिथ्यात्वीनिरधारी॥  
 तनिथुइकासूत्रबताडुं जगमांवरतेसुख  
 कारी ॥१॥साण॥ महानिशीथसूत्रमेंचा  
 रु सूत्रकहाहेजाहारी ॥ आवस्यककी  
 सरवपंचांगी एबलेणासंचारी ॥ व्यव  
 हार<sup>७</sup>ज्ञाप्यचूर्णी<sup>८</sup>नेटीका॥ लघुचूर्णी<sup>९</sup>लो<sup>१०</sup>जे  
 कारी॥वृहत्कल्पनो<sup>११</sup>ज्ञाप्यइग्यारमो वि  
 शेष<sup>१२</sup>चूर्णी<sup>१३</sup>टिका<sup>१४</sup>कारी ॥२॥ साण॥ आव  
 स्यक<sup>१५</sup>अवचूरीपनरे सोलमीदीपिकासा<sup>१६</sup>  
 धारी ॥ ऊत्तराध्यननीबेलघुवृत्ति<sup>१८</sup> पाइ<sup>१९</sup>



वसूरीलोधारी ॥ ग्रंथवीसपंचांगीकेरा  
 प्रकरणदाखुहीतकारी ॥ अंगचूलिया  
 वंदणपयनो वर्धमानस्तुतिदेखारी ॥३॥  
 सा० ॥ पूजाचैत्यवंदनपंचाशक दोनुवृ  
 त्तिसहकारी ॥ श्राधविधिटिकानेजापा  
 सार्धसतकमुलजापारी ॥ प्रतिमाशतक  
 वृक्षलघुवृत्ती शतपदीलोशंकावारी ॥  
 संदेहदोलाहलीहेतुआवस्यक श्राधदि  
 नकृतगाथारी ॥४॥ सा०॥ त्रिंशत्रि  
 काग्रंथसखाइ पोथीदेखोपूरारी ॥ जैन  
 तत्वआदर्शपेखो चारसेसतरेपुंठारी ॥  
 चैत्यवंदनएचैत्येहोवे पंचांगीठेऊपगारी  
 ॥ आवस्यकविधित्रीशुंग्रंथे जाखेजिन  
 जीजयकारी ॥५॥ सा०॥ श्रुतदेवीजिन

३१

वाणीवरते वंदनकरतेगणधारी ॥ जग  
बद्धनिशीथसूत्रमांदेखो शंकाकंखाकुटा  
री ॥ आवस्यकनीदीपिकादर्जे देवी  
थुइठेसंकारी ॥ सूरिराजेंजजीआपनिरं  
जन अन्यदेवहेअवतारी॥६॥इति७१॥

॥ पद ॥

॥ कुबजानेजाडुमारा ॥एदेशी ॥ सदगु  
रुनेबाणमारा मिथ्याजरमविदारारे ॥  
स०॥१॥ ब्रह्मएकठेलक्षणलक्षित जव्य  
अनंतनिहारा॥ सर्वउपाधिसेवर्जितशि  
वहि विष्णुज्ञानवीस्तारारे ॥स० ॥२॥  
ईश्वरसकलउपाधिनिवारी सिद्धअचल  
अविकारा ॥ शिवशक्तिजिनवाणीसंजा  
री॥ रुड्हेकरमसंहारारे ॥स०॥३॥ अ

ह्याश्रातमआपहिदेखो ॥ रामश्रातमर  
 मनारा ॥ कर्मजीतजिनराजप्रकासे ॥  
 नयथीसकलवीचारारे ॥ स० ॥ ४ ॥ स्याद  
 वादसरवांगीजाणो तीरथतारणहारा ॥  
 मोक्षसाधकतेसाधुसमजो सत्यबोलेमु  
 निधारारे ॥ स० ॥ ५ ॥ शुभजोगेवरतेते  
 जोगी जतीइंजीजीतारा ॥ संवररक्षक  
 सोसंवेगी जगतजैनजजनारारे ॥ स० ॥  
 ६ ॥ ग्रंथरहितनिग्रंथकहीजे फकीरफीक  
 रफकनारा ॥ ज्ञानवासमेंवसेसन्यासी  
 पंडितपापनिवारारे ॥ स० ॥ ७ ॥ सत्तुचि  
 त्श्रानंदरुपनीवासी परमहंसपदवारा  
 ॥ सूरिराजेंसोकेवलीसचा श्रातमजा  
 सउजारारे ॥ स० ॥ ८ ॥ इति २९ ॥

॥ श्रीमहावीर जगवाननुं ॥

॥ गरबानीदेशी ॥ जिनवरश्चरजीगर  
 जीधारके मुजरोमानीयोरेलोल ॥जि०  
 वीरथआतुमधीरके केवलपामीउरेलो  
 ल ॥जि० ॥ उर्जअमावसमांहीके मुग  
 तीतुमेवरीरेलोल ॥जि०॥ दीपोच्छवकरे  
 लोकके हर्षरीदेधरीरेलोल ॥जि०॥१॥  
 गौतमतुमगणधारके प्रातरकेवलीरेलो  
 ल ॥जि०॥ जिनवरतुमविरहोनखमाय  
 के जलवीणमांछलीरेलोल ॥जि०॥ तु  
 ममुरतीआधारके देखीहुस्रहरुरेलोल॥  
 जि० ॥ राजगढेमाहाराजके दर्शसुहंक  
 रुरेलोल ॥जि०॥२॥ जोगजाणीजसखे  
 यके मुगतीदीजीएरेलोल ॥जि०॥ धा

रीतुमधर्मध्यानके लहिरमेंरीजीएरेलो  
 ल ॥जि० ॥ स्नेहीनासीणगारके मुज  
 मनमेंवस्यारेलोल ॥जि० ॥ नहींधरुश्र  
 वरनीश्राशके सुरतरुगेकिश्यारेलोल ॥  
 जि० ॥३॥ देशोजोमुजझानके तुमघर  
 शुंघटेरेलोल ॥ जि० ॥ श्रमचाकरमक  
 ठोरके तुमबिणकिमकटेरेलोल ॥ जि०  
 चारित्रमेंदिठाचंगके करजोमाहरारेलो  
 ल ॥जि०॥ मानशुंमोटीमोजके त्रिशले  
 यतुंखरारेलोल ॥ जि० ॥४॥ मिथ्याम  
 तिसवीमेटके समकीतसंवरुरेलोल ॥  
 जि०॥ कोईकपुन्यसंजोगकेजोगजन्मयो  
 खरारेलोल ॥जि०॥ करुणाकरीनेतार  
 के जीनजवजयजगेरेलोल ॥जि०॥ सु

३५

रिराजेंद्रप्रसंगके जशजोतीजगेरेलोल

॥ जि० ॥५॥ इति २३ ॥

॥ श्रीसत्ताजनोने शीखामण तथा

रजा लेवानुं ॥

॥ प्रेमसत्ताजनो हवेराखजोतमो ॥ ए

देशी ॥ सुणोन्नवीजनो हवेनावशुंअमो

॥ धर्मध्यानमनथी नमुकशोतमो आं

कणी ॥ जैनजोगवारवार जगेजगेनथी

आज ॥ घणुंघणुंहुंएनेमाटे जांखुंहुंहीत

काज ॥१॥सुण॥ रोषदोषसरवबोणी पा

लोजीवदया ॥ अमोउपरजलीरीते त

मोराखजोमया ॥२॥सुण॥ श्रद्धाशुद्धक

रोमोजे ज्ञानध्यानसार ॥ मनुष्यजन

मपामीनेतमो पामशोन्नवपार ॥३॥सु०

३६

॥ दिवसदिवसअधिकनेह राखीतेसुजा-  
णं ॥ नीचतणीप्रीतिखोटी करेतेधर्महा  
ण ॥४॥ सु०॥ तानमानदेवपुजा करि  
विविधप्रकार ॥ जइश्युंहवेआवजोवली  
हवणावाज्याठेवार ॥५॥ सु०॥ जुलचुक  
तालतोम बोलेबोलआज ॥ मिठामि  
डुकमंतेनेमाटे मागुंठुंजिनराज ॥६॥ सु०  
॥ \*सूरिराजेंजसनाप्रेम राखज्योशुज  
नाव ॥ संसारपारपामवा जाणोआशु  
नाव ॥७॥ सु० ॥ इति २४॥

॥ संसकृत ॥

॥ सूरिणां राजासूरिराजः तेषामिंद्रः सूरि-  
रिराजेंज ॥

---

\*अर्थः सूरि कहेतां सामान्य जे आचार्य तेसना  
राजा गणधर ते गणधरना इंद तीर्थकर तेहने सूरि राजेंद्र  
कहीए एटले सुदि राजेंद्र नाम तीर्थकरनीठे एम जाणवुं ॥

३७

॥ डहा ॥

॥वीनतीश्रवधारोश्रमतणी॥सूरिराजेंड  
महाराज ॥ श्रावकइठेठेघणुं ॥ दिक्षाम  
होळवकाज ॥१॥ शिवगंजकेरेश्रावके॥  
पुनमचंदमहासाज ॥ धोराजीनगरे  
आवीया ॥ दीक्षालेवाकाज ॥ जगाम  
नीसोहामणी॥ समोवसरणमनोहार॥  
जिनप्रतिमापधरावीने ॥ दीक्षादीधी  
सार ॥ चारठाणासोहामणा॥ सतावी  
शगुणजाण ॥ पंचआचारनेपालता ॥  
चित्तपरधरिजिनआण ॥ दीक्षालीधी  
उलटघणी ॥ मनमांहरखनमाय ॥ सू  
रिराजेंडपसायथी ॥ पातिकदूरपलाय  
॥ त्रीकमवजेनागुणघणा ॥ केहतांना



आवेपार ॥ हुकमवजेगुणबोलतां ॥ ह  
 इमेहरखअपार ॥ सुरिराजेंजेशोजतुं ॥  
 धोराजीनगरमोळार ॥ समकीतआप्युं  
 अतिचलुं ॥ उत्तार्याचवपार ॥

महाराज राजेंजसुरिजी श्रीजुनागढ  
 पधारता वीनतीपत्र ॥

॥ डहा ॥ .

॥ सुरिराजेंजकृपाकरी ॥ धोराजीनगर  
 मोळार ॥ दरीशनवेहेलादीजीए ॥ मन  
 मांहरखअपार ॥ कृपाकरीपधारशो ॥  
 तरतआपमहाराज ॥ अमनेश्रलजो  
 ठेघणो ॥ मुखझुंजोवाकाज ॥ वीनतमी  
 अवधारीए सुरिराजेंजमहाराज ॥ अ,  
 मनेउलटअतिघणी ॥ दरीशनजोवाका

३९

ज ॥ आपन्ननेकगुणैर्नर्या ॥ सागरनी  
रसमान ॥ तुच्छमतिबेअमतणी ॥ ल  
खीनशकुंश्रजाण ॥

॥ स्नेहनठंडोनाहला ॥ एदेशी ॥  
॥ सूरिराजेंद्रसोहामणा ॥ सताविंशगु  
णजाण ॥ पंचआचारनेपालता ॥ पो  
तेथइसावधान ॥सू० ॥१॥ दोषवेताली  
सटालीने ॥ लेबेशुद्धअहार ॥ इरजासु  
मतिशोधतां ॥ टालेविषयविकार ॥सू०  
॥२॥ त्रीकमवजेगुणशोभता ॥ मुनिगु  
णमांजहार ॥ हुकमवजेगुणअतिघणा ॥  
तीर्थविजयमनोहार ॥सू० ॥३॥ आरंज  
सौवकायता ॥ परहरीआमहाराज ॥  
शुद्धमारगपरुपता ॥ वीचरेसोरठमोजा

र ॥ शु० ॥ ४ ॥ वंदणा अवधारो अमतणी  
 मुनिवरमांशिरदार ॥ आशापूरो अमत  
 णी ॥ वंडुवारंवार ॥ सू० ॥ ५ ॥ चारचोर  
 नेवशकरी ॥ जीत्याकाठी आतेर ॥ वं  
 दणा एकहजारने ॥ आठवार करो महेर ॥

॥ चोपाई ॥

॥ नयरजीरणगढमोऊर ॥ विचरेमुनी  
 गुणमांसिरदार ॥ सूरिराजेंडरसरयण  
 कूप ॥ प्रगटयो आरेपांचमेजूप ॥ १ ॥  
 बोझीलचपचगठनीजाण ॥ रहोनिरंतर  
 एकजध्यान ॥ उचरावेसमकीतबहुमुल्य  
 ॥ नहीकोईतेसमकीततुल्य ॥ २ ॥ अर  
 जअमारीचित्तमांधरी ॥ दरशनदीउत  
 मेकरुणाकरी ॥ वंदणा एकहजार आठ

वार॥ श्रवधारशोगुरुवारंवार ॥३॥ दर  
 शणवहेलांदेज्योसहि श्रमनेबीजीआ  
 शानही॥ गुरुप्रसादेशुनसविमले डुःख  
 दोहगसविदूरेटले ॥४॥

॥आटलुं जोम्या बाद महाराज श्रीरा  
 जेंडसूरिजी बीगेरे थाणा ४ आंही बी  
 राण्या तेथी सर्व श्रावको रामा जइ  
 गाममां पधरामणी करावी तेनी खु  
 शालीनी हकीकत ॥

॥ सूरिराजेंडजी पधारीयातमो॥ घणी  
 खुशीथीहर्षआज पामीआअमो ॥ शुद्ध  
 समकीत उचयेंतेअमो ॥ बोधदेवाकार  
 णे पधारीआतमो॥ आजतोहरपठे अ  
 मनेघणो ॥ दरशपामीकरी खुशीथया

४७

अमो॥ वीनतीकरीश्रमो जोनीएबेहाथ  
॥स्वीकारशोकृपाकरी आपमहाराज ॥  
कामक्रोधमोहलोच मायानेविकार ॥  
डरकीधाजेणेतपथी राजेंद्रमहाराज ॥  
जुलचुकखामीखोम गातागुणगुरुराय॥  
माफीसुधीरानेमाटे मागेआसजाय ॥

॥ तथास्तु ॥

॥ श्रीमल्लिजिन स्तवनो ॥

॥ मल्लिजिनंदकादर्शकियामेने ॥ जान  
लियाजिनदर्शनकुं ॥मे०॥ एआंकणी॥  
जोयणीनिमरमांमूरतिसुंदर ॥ तारणज  
विजनचंदनकुं ॥मे०॥१॥ जूम्यंतरगत  
मूरतिप्रगटी॥ कुमतितजेनक्युंफंदनकुं  
॥मे०॥२॥ जाकोअतिशयजगतहिजाने

॥ आवतहेनविवंदनकुं ॥मे० ॥३॥ च  
 सुखदयाणंउपमाजाकी ॥ मिथ्याजरम  
 निकंदनकुं ॥मे० ॥४॥ सूरिराजेंअजिने  
 अकीप्रतिमा ॥ वंदवामुनिसुरइंदनकुं ॥  
 मे०॥५॥ इतिस्तवनं २५ ॥

॥ मोहतणीगतिमोटीहोमल्लिजिन मोह  
 तणीगतिमोटी ॥ बाहिरलोकमांगन  
 तादिसे ॥ अंतरकपटकसाई ॥ जेखदे  
 खानीजनजरमावे ॥ पुद्गलाजाकाना  
 इहो ॥म०॥मो० ॥१॥ जाकेउदयेपंढित  
 जनपिता॥ आगमअर्थबिमोदे ॥ शि  
 वनारीनांसुखअतिसुंदर ॥ ठिनमांतेह  
 विखोदेहो ॥म० मो० ॥२॥ लागेलोक  
 प्रवाहमांमूरख ॥ जाखेजीतुंमोह ॥ ब

खतरबिनसंग्रामेनिश्च्ये ॥ गात्रबिन्नहोवे  
 जोहहो ॥म०मो०॥३॥ जिह्वारसलंप  
 टजशकीरती॥ बंदिजगतनीपूजा ॥ आ  
 शापासतजेजोजोगी ॥ जाकेनहींकहुंड  
 जाहो ॥म०॥४॥मो०॥ जोयणीनगरेम  
 ल्लिजिननीं ॥ जानाजुगतेकीनी ॥ सूरि  
 राजेंद्रसूत्रसंजालो॥ संवरसंगतिलीनी  
 हो ॥म०॥मो०॥५॥ इतिस्तवनं २६ ॥

॥ श्रीपार्श्वनाथजिन स्तवनं ॥

॥ केसेप्रचूपारसदरसणपावे ॥ एतोकु  
 गुरुमिथ्यात्वजमावे॥के०॥ एआंकणी०  
 शुद्धनहींजिहांजैनसमागम ॥ कहांकुण  
 रीतिजणावे ॥ तत्वरुचिविणकेसेपावे॥  
 स्वांगअनेकबनावे ॥के०॥२॥ राजपंथ

जिनआगमरीति ॥ तिनकूंदूरबतावे ॥  
 ऊजमपंथकुलिंगमिथ्यात्वी ॥ आपम  
 तेललचावे ॥ के० ॥२॥ सारथवाहनहि  
 सुणसाहिब ॥ तुमविनकोणकहावे ॥ सू  
 त्रतिहांराआपमतिमिल ॥ गच्छपरंपरा  
 गावे ॥ के० ॥३॥ सूत्रागमश्रद्धानहींसा  
 ची ॥ मुखसेंसाचबतावे ॥ तिनकीमेंपर  
 तीतकरुंकिम ॥ करुणासिंधुकहावे ॥  
 के० ॥४॥ कालअनंताजटकेजवमें ॥ दे  
 वज्यकोइखावे ॥ जिनमंदिरघरजाण  
 रहेनित्य ॥ बोधबीजनहींपावे ॥ के० ॥५॥  
 ॥ जगजीवनतुजमारगमोटो ॥ सदगु  
 रुसाचबतावे ॥ सूरिविजयरार्जेइरूपा  
 थी ॥ प्रमोदरुचिपदपावे ॥ के० ॥६॥



इतिस्तवनं २७ ॥

॥ श्री ऋषभजिन स्तवनं ॥

॥ मतजारेपियातुजवारुंगी ॥ एआंकणी  
 ॥ वीकानेरमेंऋषभजिनेशर ॥ तिनकुं  
 जायपुकारुंगी ॥ म० ॥ १ ॥ कालअनादि  
 परघररमीउ ॥ अबनेनांललकारुंगी ॥  
 म० ॥ २ ॥ आत्मशिलसुरंगकीचूरकि ॥  
 अबतेरेसिरमारुंगी ॥ म० ॥ ३ ॥ ग्यान  
 ध्यानकीपीठीकरके ॥ मिथ्यामेलउता  
 रुंगी ॥ म० ॥ ४ ॥ जिनशासनकेसरोवर  
 मांदि ॥ उपशमनीरजीलारुंगी ॥ म० ॥  
 ५ ॥ शमदमखांतिशिलाकेउपर ॥ पाप  
 कीधोतीपठारुंगी ॥ म० ॥ ६ ॥ शीलसुरं  
 गावागापेरो ॥ समकितपाघबंधारुंगी ॥

मे०॥७॥ झानानंदीकेमहेलऊरोखे॥ अ  
 नुनवसहजरमारुंगी ॥म० ॥८॥ शुद्धवे  
 तनासखिसाथबेठाके ॥ संवरपंखाढारुं  
 गी॥म०॥९॥ अध्यातममतखोलालेके॥  
 विवेकपुत्ररमारुंगी ॥म०॥१०॥ सूरिवि  
 जयरार्जेजसनामे ॥ मुजरारोजकहारुं  
 गी ॥म०॥११॥ घनमुनिजिनश्राणावहा  
 के ॥ जगजंसपद्महवजारुंगी ॥म०॥१२॥  
 ॥ इतिफाग ॥

॥ केसरियाजीनुं ॥ राग धमाल ॥  
 ॥ प्यारोकेसरीयो जोगजुगतेजुहारो ॥  
 प्यारो०॥ अनन्यपहामांबीचबीराज्यो ॥  
 सुरनरनांमनमोहेरे ॥प्या०॥१॥ च्यार  
 पहरचोधनीश्रांवाजे ॥ मिथ्यामतिदिल

धूजेरे ॥प्या०॥ सिरपरमुमटजमचोही  
 राशुं ॥ करीआंगीसहुपूजेरे ॥प्या०॥७  
 ॥ केसरकीचकेबीचबीराजे ॥ कीरतिचि  
 हुंदिशगाजेरे ॥प्या०॥ नामथकीनवनि  
 क्षिपामे ॥ नूतव्यंतरमरजाजेरे ॥प्या०  
 ॥३॥ नामथापनाडव्यजावसुं ॥ नामि  
 राजसूतसेवोरे ॥प्या०॥ एहविनाडजो  
 नहींजगमें ॥ तरणतारणकोंडदेवोरे ॥  
 प्या०॥४॥ समकितलहीकरोजात्राएह  
 नी ॥ बेहरीकरीमनठामोरे ॥प्या०॥सू  
 रिराजेंजेतीरथचारूया ॥ सेवंताशिवसु  
 खपामोरे ॥प्या०॥५॥ इति ॥

॥ वीरजिननुं स्तवनं ॥

॥ सुविहितशांतिजीपंदशोनागीरे ए

देशी ॥ शासनपतिवीरजिणंदारे ॥ मु  
 खशोभितपूनमचंदारे ॥ धनत्रिशलासु  
 तसुखकंदा ॥ सनेहीवीरजिठबीप्यारीरे  
 ॥ प्रचुराजगढेजयकारी ॥ स० ॥ १ ॥ तुम  
 दरशनथीसुखथावेरे ॥ शुद्धसमकीतस  
 रधाश्रावरे ॥ मनवंठितफलवरपावे ॥  
 स० ॥ २ ॥ महिमात्रिहुविश्वविरूपातारे ॥  
 सुरनरपतिमुनिवरध्यातारे ॥ जेट्यापर  
 तिखाशिवसुखदाता ॥ स० ॥ ३ ॥ जगता  
 रकआसतिहारीरे ॥ मनमोहननिश्चे  
 धारीरे ॥ अरजीलीज्योबिरुदसंजारी  
 ॥ स० ॥ ४ ॥ जिनदरशनदायकस्वामी  
 रे ॥ सूरिराजेंद्रपदविसरामीरे ॥ परमो  
 दरुचितुमपामी ॥ स० ॥ ५ ॥ इति ॥ ३ ० ॥

॥ श्री धोराजी नगरमां श्रीतलजीननु  
देरु ठे तेनु स्तवन ॥

॥सीतलजिनसंगतीसारी॥ मुजनेलागे  
प्यारीरे ॥ सहकरोएहनीयारी ॥ एशि  
वसुखनीदेनारी ॥ सीतल० ॥ १ ॥ म  
हावदीजाणुरे ॥ तीथिद्वादशीपरमाणुरे  
जिनंदाजन्म्याप्यारा ॥ सहनेलागेबहु  
सारा ॥ शिवसुखनादेनारा ॥ आनंद  
अधिकउगहीरे ॥ सीतल० ॥ २ ॥  
नंदाराणीमातरे ॥ दृढरथराजातातरे ॥  
नेवुंधनुषनीकाया ॥ जहीलपुरीनोराया  
॥ श्रीवठलंठनपाया ॥ मायाकरतुंमारीरे  
॥सीतल० ॥ ३॥ वरसलाखनुंआयुरे ॥  
जवीजननेतेसुहायुरे ॥ मागशरवादिसा

तमसारी ॥ दीक्षालीधीअतिप्यारी ॥  
 जशवध्योबहुजारी ॥ जैर्नाहीतकारीरे  
 ॥सीतल०॥४॥ तीनलोकनास्वामीरे ॥  
 हुंवंडुंसीरनामीरे ॥ सर्वज्ञपदधार्यो ॥  
 पोसवदीजाणो ॥ चतुरदशीपरीमाणो ॥  
 वर्थाशिवनारीरे ॥सीतल०॥५॥ हेतुपर  
 मेशररे ॥ करोउपकारमुजमेररे ॥ स  
 कलपापनेवरजी ॥ करजोमीकहेकुंवर  
 जी ॥ गुरुसूरिराजेंद्र ॥ बोमीकुमताना  
 रीरे ॥सीतल०॥६॥ इतिस्तवनं ॥३१॥

॥ श्रीआवश्यक हेतु गरजीत ॥

॥ श्रीशांतीनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ जात्रीमाजात्रानवाणुंकरीएरे ॥ एदे  
 शी ॥ चालोसखीशांतीजिणंदनेनेट्यो

रे॥ नव नवनां दुख मां मे ट्यारि ॥ चालो  
 सखी शांती० ॥ आंकणी॥ चैत्य वंदन वि  
 धि शुं करी एरे ॥ महानीसी थवचन चित्त  
 धरी एरे॥ नली जावना विधि अनुसरी ए  
 रे ॥ करी इरी आवही पाप हरी एरे ॥ चा  
 लो०॥१॥ पतीतीन खमास मणदी जेरे ॥  
 चैत्य वंदन हरि थइ की जेरे ॥ जावजिन व  
 रइ हां वंदी जेरे ॥ नर नवनो लाहोली जे  
 रे ॥ चालो०॥२॥ कालतीन नाडवजिन  
 वंदी रे ॥ उजाथा श्रोपापनी कंदी रे ॥ क  
 हो श्ररि हंत चेइ आनंदी रे ॥ नही माने ते  
 जग फंदी रे॥ चालो०॥३॥ वंदन पूज अ  
 ने सतकार रे ॥ थाओ काठ सग मे मुज सा  
 र रे ॥ वंदण वती पाठ उचार रे ॥ काठ सग

मेअनहअगाररे ॥ चालो०॥४॥ नव  
 कारकाउसगपारीरे ॥ मुलनायकथाप  
 नाधारीरे॥ थुइजणोप्रथमसुखकारीरे॥  
 पढेलोगसकहोजयकारीरे॥चालो०॥५॥  
 सरवलोकमेंचैत्यनीजगतीरे ॥ करवाक  
 होपाठनीजुगतीरे ॥ दरशनशुद्धिथील  
 होजवीमुगतीरे॥ करोकाउसगपुरवजुग  
 तीरे ॥ चालो ॥६॥ सहुतीरथनीथुइकी  
 जेरे॥ज्ञानजगतीनेअरथजणीजेरे॥ पुख  
 रवरदीकाउसगतीजेरे ॥ थुइज्ञाननीइ  
 हजलीदीजेरे ॥ चालो०॥७॥ जुइसंजा  
 सापुंजीनेबेसारीरे ॥ कहोशक्रस्तवशुजदे  
 शीरे॥ वंदोमारगशुद्धगवेषीरे॥ चैत्यसा  
 धुनीगाथाजणेसारीरे ॥चालो०॥८॥ कहो



स्तवनइहांसुनरागेरे ॥ जीमजावनाज  
 लीविधजागेरे ॥ जयवीयरायथीनवन  
 यजागेरे ॥ जाचोसोलमाजिननेआगेरे  
 ॥ चालो०॥१॥ वंदनपयनेएवीधिजाखी  
 रे ॥ जाण्यकारइहांठिसाखीरे ॥ बलीपं  
 चांगीमांदाखीरे ॥ सुविहितगीतारथदी  
 लराखीरे॥चालो०॥१०॥ इमचैत्यवंदन  
 करीआवेरे॥ गुरुजोगतीहाजिपावेरे वि  
 धिपद्मीकमीउशुननवेरे ॥ तीहांसामा  
 यकविधितावेरे ॥चालो०॥११॥ स्वमास  
 मणदेइतहीएरे॥ ममायकमुहपतीपद्मी  
 लहीएरे॥ सदेसाऊठाऊबेकहीएरे॥ न  
 वकारगुणीनेऊचरीएरे ॥चालो०॥१२॥  
 इरीआवहीपद्मीकमीवेसीरे ॥ सदेसाउ

ठाठएकहीसीरे ॥ एमबइसीसायनीस  
रीसीरे ॥ एहनीपंथीजीविधिजीसीरे॥  
चालो० ॥ १३॥ हरेपद्मादनीसाविधिज  
णीशुरे ॥ सूरिराजेंडशाजिनवरशुरे ॥  
शुधरीतिनेअनुसरशुरे ॥ शिवरमणी  
शुंमेलोकरशुरे ॥ चालो० ॥ १४ ॥  
इतिस्तवनं ॥ ३२ ॥

॥ ढाल ९ जी ॥

॥ नवीकासिद्धचक्रदंड ॥ एदेशी ॥  
शांतीजिणंदनीप्रतिमापेखी ॥ धाराजी  
नगरनदेहरे ॥ आणंदअधीकोअंगेउप  
न्यो॥ वुठयोसमकितमेहरे ॥ जिनजी॥  
विधीमारगदीठमुजने ॥ वीनबुंहीतधरी  
तुजनेहो॥ जिण॥ विधीमारगदीठमुज

ने॥ आंकणी ॥१॥ लहीसामायकपूर्ववी  
 धिशुं॥ वांद्याचैत्यसंज्ञारे ॥ जोनवीवांद्या  
 होएपूरवे॥ तोतेविधिइहांधारंरे ॥ जि० ॥  
 २ ॥ चैत्यवंदनशक्रस्तवसुधी ॥ करीने  
 चारुवांदे ॥ जगवनश्रार्यउरुकायनेसा  
 धु ॥ वरतेगुरुनेवांदेरे ॥ जि० ॥ ३ ॥ मंग  
 लश्ररथेएसहुकरीए ॥ गुरुश्राङ्गालइ  
 ठावे ॥ सामायकएप्रथमआवश्यक ॥  
 कारजहुवेसमजावेरे ॥ जि० ॥ ४ ॥ दीवस  
 तणाश्रतिचारविचारण ॥ इगामिठामि  
 कहीए ॥ तसउत्तरीतसपापनेटालवा ॥  
 अनञ्जशकतीनीरवहीएरे ॥ जि० ॥ ५ ॥  
 सरपश्रग्निजयप्रमुखेचलता ॥ जागे  
 नहीकाउसग ॥ चिंतवीएइहांएकसोचो

बीस ॥ अतिचारोनोवर्गरे ॥ जि० ॥ ६ ॥  
 सरधासंलेखणधारेव्रतना ॥ पांचपांच  
 अतिचार ॥ पनरेकरमादाननालहीए  
 ॥ तपनाजाणोबाररे ॥ जि० ॥ ७ ॥ ज्ञान  
 दरशननेचारित्राचरणा ॥ आठआठ  
 प्रतेक ॥ विरीयाचारनातीनवखाण्या ॥  
 एकसोचोबीसठेकरे ॥ जि० ॥ ८ ॥ आज  
 नादीवसमेंशंकाकीधी ॥ समकितमेंको  
 ईदोष ॥ एमसहुव्रतनादोषविचारी ॥  
 राखीएमनमेंनरोषरे ॥ जि० ॥ ९ ॥ पारी  
 काउसगचोबीसठो ॥ बीजोआवशकए  
 ह ॥ उपगारीसामायकदरशक ॥ बंदो  
 धरीससनेहरे ॥ जि० ॥ १० ॥ दोषप्रका  
 शवागुरुनेवांदे ॥ अविनयवरज्योत्रीज ॥

मुहपतीश्रंगपमीलेहकरीने ॥ जावेगुरु  
 वंदीजेरे ॥ जि० ॥ ११ ॥ इगामिपमीकमी  
 ठकहीजाखे ॥ गुरुआगेसहुदोष ॥ दी  
 वसनोदंमआपेगुरुजेहवो ॥ धारीकरे  
 संतोषरे ॥ जि० ॥ १२ ॥ प्रतिषेध्योजोका  
 मकरेतो ॥ करवानोनहीकीधो ॥ अस  
 दहोविपरीतपरुष्यो ॥ पमीकमएपरशि  
 धोरे ॥ जि० ॥ १३ ॥ समजावेपमीकमवा  
 माटे ॥ सामायकइहांकहीए ॥ नवका  
 रमंगलपुरवकजाणो ॥ अतिचारपमी  
 कमीएरे ॥ जि० ॥ १४ ॥ चोथोआवश्य  
 ककरीनेवांदे ॥ गुरुनीआणाकीधी ॥ आचा  
 र्यादीकखामीनेवंदे ॥ पापनीसोधिली  
 धीरे ॥ जि० ॥ १५ ॥ झूलचूकनादोषरह्या

ते काउसगकरीनेठोमे ॥ सावायककरी  
 काउसगठावे ॥ आनरातंयवोजेजेरे ॥  
 जि० ॥१६॥ चारित्राचारनीशुद्धिकथा  
 ॥ श्वासोश्वासपचास ॥ दर्शनशुद्धि  
 गसकहीने ॥ काउसगपचवीसश्वासरे  
 ॥ जि० ॥१७॥ ज्ञानाचारनीशुद्धिनेअ  
 रथे ॥ पुस्वरवरदीकहीजे ॥ काउसगप  
 चवीसश्वासोश्वासजो ॥ सिद्धनास्तुति  
 तीनदीजेरे ॥ जि० ॥१८॥ एमदरणका  
 टवाओषधकरीने ॥ गुणधारणहीवेकी  
 जे ॥ वांच्याविणपचखाणनहोये ॥ पमी  
 लेहीवांदणादीजेरे ॥ जि० ॥१९॥ वर्ध  
 मानगुरुथुइपेहेली ॥ कहेपतीसहुबोले ॥  
 एमआवश्यकनीपंचांगी ॥ नजबाहुविधि

खोलेरे ॥ जि० ॥ ९० ॥ नयनिखेपविचा  
 रबेबहुलो ॥ गुरुगमथीजवीजाणो ॥ सि  
 द्धांतलक्षकरीनेजोगे ॥ करसोनखांचाता  
 णोरे ॥ जि० ॥ ९१ ॥ मुजमनमेंश्रीशां  
 तिजिणंदनो ॥ ध्यानहुवोनिशदीस ॥  
 विरुधश्रांचरणहोजोनमाहरे ॥ अरजी  
 एजगदीशरे ॥ जि० ॥ ९२ ॥ संवतद्वि  
 चउअंकशशीमे ॥ दसमीवदिआसोज  
 ॥ धोराजीनगरसूरिराजेंदनी ॥ स्तव  
 नाकरीधरीमोजरे ॥ जिनजी० ॥ विधि  
 मारगदीआमुजने ॥ ९३ ॥ इति ॥ ३३ ॥



६१

॥श्री धोराजी नगरमां शांतिनाथ म  
हाराज मुलनायकजी बिराज्याठे  
तेनु स्तवन ॥

॥ पुरणथयोठेखेल ॥ सजनोपुरणथयो  
ठेखेल॥ एदेशी ॥ शांतिनाथजगवान॥  
जावेजेठ्याशांतिनाथजगवान ॥ आंक  
णी ॥ चालीशधनुषप्रमाणशरीरनो ॥  
मृगलंठनकंचनवान ॥ जावे० ॥१॥ अ  
जितसंजवप्रजुपासेबीराजे पार्श्वनाथज  
गजाण ॥ जावे० ॥ २ ॥ देखोदरशस  
रसशांतिको ॥ टल्योमीथ्यातीजान ॥  
जावे० ॥३॥ त्रणप्रदक्षणादेइकरीने ॥  
विधिएकरुहुंध्यान ॥ जावे०॥४॥ बहोत  
जातकेपुष्पमंगावी ॥ हारठवुगुलतान



॥ जावे ० ॥ ५ ॥ बहेकजातकेधुपउखेवी ॥  
 आरतीकरुंहुंधाम ॥ जावे ० ॥ ६ ॥ हैएध  
 रीजावजावनाजावुं ॥ धोराजीनगरपु  
 रस्थान ॥ जावे ० ॥ ७ ॥ सकलसंघसेवक  
 जिनजीको ॥ जादवजीकरेझान ॥ जा  
 वे ० ॥ ८ ॥ इतिस्तवनं ॥ ३४ ॥

॥ श्रीशांतीनाथजीनुं स्तवन ॥  
 ॥ सुविहीतशांतिजीणंदशोनागीरे ॥ रा  
 जतरत्नपुरीवद्मनागीरे ॥ प्रज्जुशमदमगु  
 णनारागी ॥ सखीरीजोगजुगतीहीवेजा  
 गीरे ॥ एआंकणी ॥ मनेकुमतीएभरमा  
 योरे ॥ मोहमदनोप्यालोपायोरे ॥ मन  
 मिथ्यानंदरीजायो ॥ स० ॥ १ ॥ मनमो  
 हनीमायाकेलीरे ॥ दोयसुनटचौरनेमे

६३

जरीरे ॥ चोरीअखुटखजानानीथेली ॥  
स०॥१॥ मनेसुमतिएसमजायोरे॥ डुर  
मतीनोठेढोठेढायोरे ॥ निजअनुजवर  
सलेचखायो ॥स० ॥३॥ हवीसंजमरंग  
मांरमशुरे ॥ प्रजुशांतिनीसेवावेहेशुरे॥  
निजघरनीअरजकिरशुं ॥स० ॥४॥ ह  
वेचतुरंगीसेनासजशुरे॥ मोहरायनीफो  
जहठाशुरे ॥ सरधानयरीनिशाणाधरा  
शुं ॥स० ॥५॥ आतमदरपणदरशतेदेखी  
रेसूरिराजेंडपदनेपेखीरे ॥ थाशुंधनमु  
निचरणगवेखी ॥स० ॥६॥ इति॥ ३५॥

॥ कलस ॥

॥ एमशांतिजिनवर॥ सकलछखहर ॥  
गाइउगुणरागथी ॥ मुलचंदसुतफुलचं

६४

दन्त्रागृह ॥ पद्मिकमणाविधिज्ञानथी ॥  
वरहेतुजुगती ॥ स्तवनजगती ॥ धार  
ज्योत्नविजनगुणी ॥ धोराजीनगरे ॥ ल  
बीलीला ॥ पामशोसंपतीघणी ॥२॥



॥ सुगुरु पञ्चीशी ॥

॥ सुगुरुपिठाणोएणीआचरणे॥ समकि  
तजेहनोशुद्धजी ॥ कहेणीकरणीएकसं  
रीषी ॥ अहनिशधरमविलुद्धजि ॥१॥  
सु०॥ निरतीचारमहाव्रतपाले ॥ टाले  
सघलादोषजि ॥ चारित्रशुंलयलीनर  
हेनीत ॥ चितमांसदासंतोषजी ॥२॥  
सु०॥ जीवसद्गुनाजेबेपीहर ॥ पीमैनहिं  
षटकायजी॥ आपवेदनपरवेदनसरषी  
॥ नहणेनकरेघायजी ॥३॥ सु०॥ मोह  
करमनाजेवशनपद्म्यां ॥ निरागीनिर  
मायजी ॥ जयणाकरताहलुएचाले ॥  
पुंजीमूकेपायजी ॥४॥ सु०॥ अरहोप  
रहोदृष्टिनदेषे ॥ नकरेचलतांवातजी ॥

दूषणरहितसूऊतोदेषे ॥ तेलहेपाणीचा  
 तजी ॥५॥ सु० ॥ चूखतृषांपीम्यांदूख  
 चीम्यां ॥ बुटेजोनिजप्राणजी ॥ तोपण  
 अशुद्धआहारनवांठे ॥ जिनवरआणप्र  
 माणजी ॥६॥ सु० ॥ अरसनिरसआहा  
 रगवेषे ॥ सरसतणीनहिचाहजी ॥ ए  
 मकरतांजोसरसमिलेतो ॥ हरषनहीम  
 नमांहजी ॥७॥ सु० ॥ सीतकालेसीतेत  
 नुसुके ॥ उनालेरवितापजी ॥ विकट  
 परिसहघटअहियासैं ॥ नाणेमनसंता  
 पजि ॥८॥ सु० ॥ मारेकुटेरहेउपज्व ॥  
 कोइकलंकदेइशिशजी ॥ करमतणाफ  
 लजाणउदारपण ॥ नाणेमनमेंरीसजी  
 ॥९॥ सु० ॥ मनवचकायानेजेदंढे ॥ ॐ

६७

पंचप्रमादजी ॥ पंचप्रमादसंसारवधा  
रे ॥ जांणेतेनसवादजि ॥१०॥सु०॥ स  
रलसजावजावमनरूढो ॥ नकरेवाद  
विवादजी ॥ च्यारकषायकरमनाकार  
ण ॥ वरजेमनउनमादजि ॥११॥सु०॥  
पापथानिकअढारेवरजे ॥ नकरेतासप्र  
संगजि ॥ विकथामुखथीच्यारनिवारे  
सुमतिगुपतिशुंरंगजि ॥१२॥सु०॥ अं  
गठपांगसिद्धांतवखाणे ॥ देसुधोउपदेश  
जी ॥ सुद्धोमारगचलेचलावे ॥ पंचाचा  
रविशेषजी ॥१३॥सु०॥ दशविधजतिध  
र्मजेजाण्या ॥ तेहनाधारणहारजि ॥  
धरमथकिजेकिमहिनचूके ॥ जोहोवेला  
खप्रकारजि ॥१४॥सु०॥ जीवतणीहिं

स्थानकरे ॥ नवदेमृषावादजी ॥ तृण  
 मात्रश्चण्णदीधोनलहे ॥ सेवेनहिअब्रह्म  
 जि ॥ १५ ॥ सु० ॥ नवविधपरिग्रहमूलन  
 राखे ॥ निशिजोजनपरिहारजी ॥ क्रो  
 धमानमायानेममतां ॥ नकरेल्लोचल  
 गारजी ॥ १६ ॥ सु० ॥ जोतिषत्रगमनि  
 गमनज्ञाखे ॥ नकरावेआरंजजि ॥ उष  
 धनकरेनाग्निजोवे ॥ सदारहेनिरारंज  
 जी ॥ १७ ॥ सु० ॥ माकणीशाकणीचूतन  
 काढे ॥ नकरेहलवोहाथजि मंत्रजंत्ररा  
 खनीकरिने ॥ नविआपेपरमारथजी ॥  
 १८ ॥ सु० ॥ विचरेगामनगरपुरसघले ॥  
 नकरेएकण्ठामजी ॥ चोमासाउपरघो  
 मासुं ॥ नकरेएकण्ठामजी ॥ १९ ॥ सु०

६९

॥ चाकरनफरपासनराखे ॥ नकरावे  
कोइपासजि ॥ नावणधोवणवेसबणाव  
ण॥ नकरेशरीरनीसारजी ॥१०॥सु०॥  
व्याजवटावनोनामनजाणे ॥ नकरेवण  
जव्यापारजी॥ धर्महाटमांदिनेबेठा॥वि  
णज्येपरउपगारजि॥११॥सु०॥ सुगुरुत  
रेश्रवरनेतारे ॥ सायरजिमजीहाजजी  
॥ काष्टप्रसंगेलोहतरेजिम ॥ गुरुसंग  
तियेआजजी ॥१२॥सु०॥ सुगुरुप्रकाश  
कलोयणसरिखा ॥ ज्ञानतणादातार  
जी॥ सुगुरुदीपघटअंतरकेरो ॥ डुरकरे  
अंधकारजी ॥१३॥सु०॥ सुगुरुअमृत  
सरिखामीले ॥ दीएअमरगतिवासजि  
सुगुरुतणीसेवानीतकरतां ॥ मोटाबूटे



पासजि ॥२४॥ सु०॥ सुगुरुपञ्चीसिश्च  
वणेसुणीने ॥ करज्योसुगुरुप्रसंगजि ॥  
कहेजिनहरषसुगुरुपसाये ॥ शांतिहर्ष  
उठरंगजी ॥ २५ ॥ सु० ॥ इतिसुगुरु  
पञ्चीशी ॥

॥ कुगुरु पञ्चीशी ॥

॥ अथ सझाय ॥ डहा ॥ श्री  
जिनवरप्रणमीसदा ॥ लेइसदगुरुआ  
धार ॥ कुगुरुतणालक्षणकहुं ॥ सुणजो  
सहुनरनार ॥१॥

॥ ढाल ॥ चोपाइ ॥ मनसु  
द्विसुणजोनरनार॥ हृदयमधेधरज्योल  
गार ॥ पंचप्रमादजेनविठांमसे ॥ ते  
गुरुकेमतरशेतारशे ॥ १ ॥ कंठलगि

नित्यज्जोनकरे ॥ जेपरलोकथकिनव  
 मरें ॥ समिसांजथीसंथारशें ॥ते०॥१॥  
 दिनउग्यांविणदातणकरे ॥ मनमांसुग  
 पणुआदरे॥ नकरेपचखाणकदिएनोका  
 रशी॥ते० ॥३॥ पटियांपामेसमारकेश॥  
 नित्यनित्यनवाबनावेबेश ॥ मुखधोवे  
 जोएआरशी ॥ते०॥४॥ साकरदूधपीये  
 प्रजात॥ चावलदालजमेनित्यजात॥ बे  
 तालीशदोषजेनवटालशे ॥ते०॥५॥ स्त्री  
 शुंवातकरेजेधणी ॥मनमांशंकानकरेको  
 तणी ॥जेषटकायनवउगारशें ॥ते०॥६॥  
 उनोनीरनवपीयेकदा ॥सजलकुंजजरी  
 मुकेसदा ॥ऊरऊरीयांपाणीठारशे ॥ ते०  
 ॥७॥ जेमुनिरातेफानसकरे ॥ पद्मदोबां

धिखुणेनतरे ॥ नक्षत्रनक्षनवटालशे ॥  
 ते० ॥ ७ ॥ वंठेमैथुनराखेदाम ॥ नामधरा  
 वेगौतमसाम ॥ विषयकषायजेनववार  
 शे ॥ ते० ॥ ए ॥ दिवससारेजेनमतोज  
 मे ॥ रातपद्मेसारीपासेंरमें एकजितेए  
 कहारशे ॥ ते० ॥ १० ॥ धबधबमारगचा  
 ल्योजाय ॥ ईर्यासुमतीनवजोवाय मन  
 मांजयनवधारशे ॥ ते० ॥ ११ ॥ जम्बिबु  
 द्विनेजनमोतरी ॥ हलवोहाथकरेहित  
 धरी ॥ सापविठुंजेनतारशे ॥ ते० ॥ १२ ॥  
 गाम्बोजचलावेवलि ॥ वणजव्यापारक  
 रेमनरलि ॥ सावद्यकरणीसंजारशे ॥  
 ते० ॥ १३ ॥ पंचेआश्रवसेवेसही ॥ सुधे  
 मारगचालेनही ॥ हाथेकरिफूलफल

वधारशे ॥ते० ॥१४॥ जेमुनिराखेकांट  
 कांटला ॥ अकालेसेवेपाटपाटला ॥  
 मानवजवएमहारशे ॥ते०१५॥ कूटप्र  
 पंचकरेजेघणा ॥ मनमांकांइनराखेमणा  
 ॥ पोतेपिंढपापेजारशे ॥ते०॥१६॥ गुण  
 वंतनाश्रवगुणदाखवे ॥ आपतणाश्रव  
 गुणउलवे ॥ जेआधाकर्मीआहारहोरशे  
 ॥ते०१७॥ सुरजउगेकरेस्नान ॥ धूपउ  
 खेवेबेसेध्यान ॥ मिथ्यासुरादेवमनधा  
 रशे ॥ते० ॥१८॥ एकणघरधर्मलाज  
 दिये ॥ अशनादिकआपेतेलिये ॥ बी  
 जेदिनतेघेरफेरहोरशे ॥ते०॥१९॥ वा  
 हनबेशिचालेपंथ ॥ नामधरावेडेनिग्रंथ  
 ॥ इमश्रीजिनशासनलजावशे ॥ ते०॥

२०॥ वेचातालेइचेलाकरे ॥ विनवैरा  
 गेचारित्रउचरे ॥ नविजननाबोधबीज  
 केमठारशे ॥ ते० ॥ २१ ॥ मातपितानाबा  
 लकजेह ॥ तेहनेवियोगपद्मावेतेह ॥ ते  
 हथकीडुरगतिपामशे ॥ ते० ॥ २२ ॥ सघ  
 लीपरवीवहोरेवीगे ॥ जमणवारदेखी  
 मनरगे ॥ जावदेहरेदेवनझुवारशे ॥  
 ते० ॥ २३ ॥ कुगुरुतणालक्षणबेअनंत ॥  
 कहेतांकेमहिनआवेअंत ॥ कुगुरुतणी  
 संगतजेचालशे ॥ तेसंसारनवोनवहा  
 रशे ॥ २४ ॥ श्रीआणंदविमलसूरीगुरु  
 राज ॥ पंचमआरेदीठोआज ॥ तेहत  
 णालइयेसुपसाय ॥ नणेतेजपालसुख  
 दाय ॥ २५ ॥ इतिकुगुरुपच्चीशी ॥

# ॥ सम्यक्त उचरवानो आलावा सहित उपदेश ॥

कोइ कहेते के अमने गुरु करी ले  
ए सम्यक्त ते एम कहे ते मृषावादी  
केमके एहवो सम्यक्त कोइ सूत्रमां क  
ह्यो नथी महावीरस्वामीए पण क  
ह्योते के जे माहरीं आणामां चाले के  
वली वचन प्रमाणे बोले ते माहरा  
जेहवोज ते ए आचारांग सूत्रमां कह्युं  
एहवो चाले तेहज मुनि पण पोतेज  
गुरु बीजा नथी एम न कहिवो केम  
के निश्चे सम्यक्त तो ए आत्माज गु  
रु देव ने धर्म ते अने व्यवहार स  
म्यक्त तो देव अरिहंत गुरु निग्रंथ दया

મૂલ ધર્મ એ સિવાય અન્યનો ત્યાગ તે  
 વ્યવહાર સમ્યક્ત તથા કોઈ કહે સ  
 મ્યક્ત ઊચરવો મિથ્યાત્વનો ત્યાગ કર  
 વો તે કાંઈ સમ્યક્ત નથી સમ્યક્ત તો  
 આત્મામાં છે એમ બોલનારો તે વ્યવ  
 હાર લોપી છે સર્વ શાસનનો નાશ ક  
 રનારો મહા પાપી છે કેમકે શ્રાવકના  
 બે જેદ છે એક અવિરતી સમ્યક્તદૃષ્ટી  
 બીજો દેશવિરતી તેમાં જે સમ્યક્ત ઊચ  
 રે અને મિથ્યાત્વનો ત્યાગ કરે બીજું  
 કાંઈ પણ પચ્ચલાણ ન કરે તે અવિર  
 તે સમ્યક્તદૃષ્ટી અને નિલવણ પ્રમુખ  
 ત્યાગ કરે તે દેશવિરતી અને જે દેવ  
 પ્રમુખ ત્યાગ નથી કરતા તેહને સમ્ય

क्त ते ते निश्चे रूप ते तेनो इहां कथ  
 न नथी पण मनुष्य चवमां तो विशे  
 ष व्यवहार प्रधान ते निश्चे ते गौण  
 मां रहे ते केमके आवश्यक प्रमुख ग्रं  
 थोमां सम्यक्त उचरवानो पाठ ते इमते  
 ॥समणोवायउ पुठ्वामेवमिच्छतांउ पढि  
 कमितिसम्मतं उवसंपज्जत्तिणोसेकप्प  
 त्ति अज्जप्पन्नित्तिं अन्नउच्चिएवा अ  
 ण्णउच्चियदेवयाणिवा अण्णउच्चियपरि  
 ग्गहियाणि वाचेतियाणिवांदित्तएवा न  
 मंसित्तएवा पुठ्विअणालित्तेणं आल  
 वित्तएवा संलवित्तएवातेसि असणंवा  
 षदातुंवा अणुप्पदातुंवाणण्णवराया  
 न्निउगेणं बलान्निउगेणं गणान्निउगेणं



देवयान्नियोगेणं गुरुनिग्रहेणं वित्तीकं  
 तारेणं ए पाठ ॥ आवश्यक चूर्णिमां  
 तथा पंचाशक टीकामां तथा उपधान  
 प्रकरणमां नंदी प्रमुख विधि सही  
 त उचरवानो लखे ते माटे सम्यक्त उ  
 चरवानो ना नथी कोइ कहे सम्यक्त उ  
 चरे पढी कुगुरुने दाक्षिण्यपणा माटे  
 पण ने नमवो कपटाइ थाय केमके  
 उपरथी नमे मनमां कपट ते माटे  
 एह कहिवो अजुक्त ते केमके गुरुबु  
 द्धिए न नमे संसार व्यवहारि नमे  
 ते कपटाई नथी ॥ इति ॥

## अनुक्रमणिका.

|  | पृष्ठ. |
|--|--------|
| श्रीनेमीश्वर भगवानने राजकुलनारी वीनती करेडे तेनुं. | १      |
| ” ” ” ”  | ३      |
| ” ” ” ”  | ४      |
| श्री शांतिनाथ भगवानना गुणग्रामनुं.                 | ५      |
| श्री समकीत शुद्ध करवानुं.                          | ७      |
| श्री शांतिनाथ महाराजनुं.                           | ९      |
| श्री समकीत शुद्ध करवानुं.                          | १०     |
| ” ” ” ”  | ११     |
| श्री शांतिनाथ महाराजनुं.                           | १२     |
| ” ” ” ”  | १३     |
| श्री पार्श्वनाथ महाराजनुं.                         | १५     |
| स्त्री धोराजीमां अठाइ उछव थयो तेनुं.               | १६     |
| श्री सीद्धाचलजीनुं.                                | १८     |
| श्री नेमीश्वर जगवाननुं.                            | १९     |
| ” ” ” ”  | २१     |
| श्री अष्टापदजीनुं.                                 | २३     |
| श्री शांतिनाथ अष्टाद स्तवन.                        | २४     |
| श्री शांतिनाथ अरिहंत भगवाननुं.                     | २५     |
| श्री तीर्थ वंदनानुं.                               | २६     |
| श्री सुमतीनाथ भगवाननुं.                            | २७     |

|  |    |
|--|----|
| तीन थुना सुन्ननी लावणी.                            | ३८ |
| बोधक पद.   | ३१ |
| श्री महावीर भगवाननुं.                              | ३३ |
| श्री सजाजनोने शीखामण तथा रजा लेवानुं.              | ३५ |
| उहा.   | ३७ |
| महाराज राजेंद्रसूरिजी श्री जुनागढ पधारता वीनतीपत्र | ३८ |
| स्नेह न ठंडो नाहला.                                | ३९ |
| चोपार्ह.   | ४० |
| पधरामणीनी खुशालीनी हकीकत.                          | ४१ |
| श्री मल्लीजिन स्तवनो.                              | ४२ |
| श्री पार्श्वजिन स्तवन.                             | ४४ |
| श्री ऋषजिन स्तवन.                                  | ४६ |
| श्री केसरियाजीनुं                                  | ४७ |
| श्री वीरजिननुं.                                    | ४८ |
| श्री शीतलजिननुं                                    | ५० |
| श्री शांतिनाथ स्वामीनुं.                           | ५१ |
| श्री शांतिनाथजी मुलनायकनुं                         | ६१ |
| श्री शांतिनाथजीनूं                                 | ६२ |
| कलस.   | ६३ |
| सुगुरुपच्चीशी.                                     | ६५ |
| कुगुरुपच्चीशी.                                     | ७० |
| अभ्यक्त उचरवानो अगलापा सहित उपदेश.                 | ७५ |



# जाहेर खबर.

—००००००००—

सरवे जैनी बंधुने खबर आपवामां आवे ते ते  
नीचे लखेली चोपडीच नीचे लखेला ठेकापोथीमलशे.  
टंपाजे खरच जुड पडशे.

रसीक स्तवनावली  
कीमत ०-२-६

शा० अमीचंद जेठासा ठा. पां  
जरापोल तथा शा० हीराचंद  
ककलभाइ मांडवीनी पोलमां  
नागजी जुदरनी पोलमां अम  
दावाद.

देवसी राह पडीक-  
मणा सूत्र.  
कीमत ०-४-०  
समकीतनी पूजा.  
कीमत ०-५-०

लखमीचंद जेठासा अमदावाद  
ठा. पांजरापोल.

